डॉ० संगीता राय
अतिथि शिक्षक
संस्कृत विभाग
एच० डी० जैन कॉलेज, आरा

वैदिक साहित्य का इतिहास :—
वैदिक व्याख्याकार — सायण एवं दयानन्द

1) सायण :- प्राचीन वैदिक पद्धति वैज्ञानिक तथा याज्ञिक इन दो वर्गों में रखी जा सकती है। वैज्ञानिक पद्धति निरुक्तकार यास्क की तथा याज्ञिक पद्धति की व्याख्या आचार्य सायण ने की है।

आचार्य सायण का समय 14वीं शताब्दी में माना गया है। आचार्य सायण ने चारों वेद पर भाष्य लिखे हैं। इन्होंने ऋग्वेद की शाकल संहिता पर, शुक्ल यजुर्वेद की काण्व संहिता पर, कृष्ण यजुर्वेद की तैत्तिरीय संहिता पर, सामवेद की कौथुम संहिता पर और अथर्ववेद की शौनक संहिता पर भाष्य लिखें हैं। इनके भाष्यों पर पूर्ववर्ती भाष्यकारों विशेषकर स्कन्दस्वामी (नवीं शताब्दी), तथा वेंकटमाधव (1100ई.) का विशेष प्रभाव पड़ा है।

चारों वेदों पर भाष्य लिखने के अतिरिक्त इन्होंने 13 ब्राह्मणों-आरण्यकों पर 'वेदार्थप्रकाश' नामक भाष्य की रचना की है।

आचार्य सायण ने यज्ञों की दृष्टि से अपने भाष्यों को लिखा है। वेद का अर्थज्ञान केवल यज्ञ के अनुष्ठान के काम में आता है - यह बात सायण की उक्तियों से प्रकट होती है। उनके मतों में वेदों का प्रतिपाद्य विषय कर्मकाण्ड तथा देवताओं का आख्यान करना है। उनके अर्थ इसी दृष्टिकोण से लिखे गये हैं। इसीलिए पाश्चात्य वैदिक भाष्यकारों ने सायण को याज्ञिक भाष्यकार कहा है। वेदों के विषय को विज्ञान, कर्म, उपासना, ज्ञान - इन चार काण्डों में समझा

जाता है, तथा इनमें तीन प्रकार के अर्थ - आधिदैविक, आध्यात्मिक और आधिभौतिक कहे जाते हैं। सायण ने आधिदैविक - याज्ञिक अर्थों और कर्मकाण्ड को प्रधानता देकर व्याख्या की है। यथा —

चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्यां आ विवेश॥

उक्त मन्त्र में महादेव का वर्णन किया गया है। सायण ने महादेव को यज्ञ मानकर इनका अर्थ किया है — यज्ञ के चार सींग हैं - चार वेद, तीन पैर हैं - प्रातः, मध्य और सायं सवनः दो सिर हैं - दो हवन, सात हाथ हैं - गायत्री आदि सात छन्द। वह तीन तरफ से बँधा हुआ है — मन्त्र, ब्राह्मण और कल्प से। वह वृषभ अर्थात् अभीष्ट को बढ़ाने वाला है और अत्यधिक शब्द करता है। वह महान् देव रूपी यज्ञ मनुष्यों के बीच में प्रवेश करता है।

इस प्रकार सायण ने मंत्रों की यज्ञपरक व्याख्या की है। जिन मन्त्रों में यज्ञपरक अर्थ नहीं बैठता, वहाँ सायण अद्वैत वेदान्त का आश्रय लेते हैं, यथा — पुरुष सूक्त की व्याख्या में। सायण का भाष्य पाण्डित्य की पराकाष्ठा है, जिसमें भारत की समस्त शास्त्रीय परम्परा का समन्वय किया गया है। पुराण, इतिहास, स्मृति, कोश, निरुक्त, व्याकरण, कल्पसूत्र, ब्राह्मण, महाभारत आदि अनेक स्थलों से समुचित उद्धरण देकर आचार्य सायण ने अपने कथ्य को समर्पित किया है।

ii) स्वामी दयानन्द — अर्वाचीन पद्धति में वैज्ञानिक, परम्परावादी आध्यात्मिक तथा पाश्चात्यमत समर्थक - ये चार कोटियाँ हैं। स्वामी दयानन्द ने वैज्ञानिक पद्धति के व्याख्याकार माने गए हैं।

स्वामी दयानन्द ने यजुर्वेद की माध्यन्दिन संहिता पर तथा ऋग्वेद के सातवें मण्डल के दूसरे सूक्त के दूसरे मन्त्र तक भाष्य लिखा था। उन्होंने वेदों की व्याख्या में यास्क को सबसे अधिक प्रामाणिक माना है। निरुक्त तथा व्याकरण के

आधार पर ही उन्होंने सभी शब्दों को यौगिक अथवा योगरूढ़ मानकर वेदों की व्याख्या की है। उन्होंने वेदों में बहुदेवतावाद का खण्डन कर एकेश्वरवाद का समर्थन किया है। उनका कथन है कि वेदों में एक ईश्वर की स्तुति की गई है तथा इन्द्र आदि देवतावाचक सभी नाम परमात्मा के अर्थ को व्यक्त करते हैं और परमात्मा की विभिन्न शक्तियों को बताते हैं। इन्द्र, अग्नि, वरुण आदि जो तथाकथित देवता-वाचक शब्द हैं, वे सब यौगिक होने के कारण परमेश्वर के विविध पक्षों के बोधक हैं। स्वामी दयानन्द ने वेदों को ईश्वरकृत तथा नित्य माना है। उनके मतानुसार वेद के रूप में केवल मन्त्रभाग है, वही ईश्वर-वचन है। ब्राह्मण भाग वेद नहीं है, अपितु जीवोक्त वेदव्याख्या तथा कर्मकाण्ड का ग्रन्थ है। वेदों में वर्णित विषय को चार भागों में बाँटा जा सकता है —

(i) विज्ञान (ii) कर्म (iii) उपासना (iv) ज्ञान

वेदों के तीन प्रकार के अर्थ किए जा सकते हैं —

i) आध्यात्मिक
ii) आधिदैविक
iii) आधिभौतिक

स्वामी दयानन्द के अनुसार वेदों में इतिहास नहीं है, किन्तु ज्ञान-विज्ञान के सभी सूत्र उनमें निहित है।

—x—